भारत-मॉरीशस संबंध

मॉरीशस के प्रधानमंत्री की वाराणसी यात्रा के दौरान, भारत को उनके सामाजिक-आर्थिक विकास में एक विश्वसनीय भागीदार और एक अटल समर्थक बताया गया।

यात्रा के परिणाम

- **आर्थिक सहायता: पोर्ट लुई डेवलपमेंट, चागोस MPA सर्विलांस, बुनियादी ढाँचे, रोज़गार और स्वास्थ्य सेवा** के लिये विशेष पैकेज।
  - भारत के बाहर पहला **जन औषधि केंद्र; आयुष उत्कृष्टता केंद्र** के लिये सहयोग।
- **सामुदायिक विकास: उच्च प्रभाव वाली सामुदायिक विकास परियोजनाओं** के **द्वितीय चरण** के लिये समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर।
  - भारत, **मिशन कर्मयोगी** के माध्यम से मॉरीशस के लिये सिविल सेवा क्षमता निर्माण प्रदान करेगा।
- **ऊर्जा: 17.5 मेगावाट के फ्लोटिंग सोलर एनर्जी प्लांट** सहित **ऊर्जा एवं विद्युत क्षेत्र में सहयोग** पर समझौता ज्ञापन।
- **अंतरिक्ष:** उपग्रह टेलीमेट्री, नेविगेशन, रिमोट सेंसिंग और क्षमता निर्माण के लिये अंतरिक्ष सहयोग पर समझौता ज्ञापन।

भारत-मॉरिशस संबंधों की जानकारी

- **राजनयिक संबंध: वर्ष 1948** में स्थापित; संबंधों को **उन्नत रणनीतिक साझेदारी (2025)** तक बढ़ाया गया।
- **CECPA (2021):** किसी अफ्रीकी देश के साथ भारत का **पहला व्यापार समझौता**।
- **व्यापार:** भारत - **तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** (वर्ष 2024 में मॉरीशस के आयात का 11%)।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):** मॉरीशस ने **$180 बिलियन (वर्ष 2000-25)** का योगदान दिया, जो भारत के कुल FDI का **25%** है **(डबल टैक्सेशन अवॉइडेंस कन्वेंशन के अंतर्गत)**; जो वित्त वर्ष 2023-24 में सिंगापुर के बाद **दूसरा सबसे बड़ा स्रोत** रहा।
- **विकास एवं संस्कृति:** भारत **स्वास्थ्य, शिक्षा,** महात्मा गांधी संस्थान और **भारतीय सांस्कृतिक केंद्र** (विदेश में सबसे बड़ा) का समर्थक है।
- **पर्यटन:** दोनों देशों के नागरिकों के लिये नि:शुल्क वीज़ा।
- **रणनीतिक सहयोग:** मॉरीशस **पड़ोस प्रथम नीति और विज़न महासागर** के लिये महत्त्वपूर्ण है; इसमें **AIKEYME** जैसे अभ्यास शामिल हैं।

भारत-मॉरीशस संबंधों में चुनौतियाँ	आगे की राह
बढ़ते चीनी निवेश (जैसे, **जिनफेई स्मार्ट सिटी, बंदरगाह परियोजनाएँ**) एवं मॉरीशस का चीन, फ्राँस एवं अमेरिका के साथ संतुलन, भारत के प्रभाव को कम कर रहे हैं।	**MAHASAGAR** परियोजना के अंतर्गत **अगालेगा द्वीप** (Agaléga Island) के बुनियादी ढाँचे और सहयोग को बढ़ावा देना।
भारतीय लोक क्षेत्र के उद्यम मॉरीशस की आर्थिक गतिविधियों पर हावी हैं, जबकि **निजी क्षेत्र की भागीदारी कम बनी हुई है।**	तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वित्तीय सेवाओं में **भारतीय निजी क्षेत्र की भागीदारी** को प्रोत्साहित करना।
समुद्री डकैती, मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध मत्स्य ग्रहण से पश्चिमी हिंद महासागर अस्थिर हो रहा है।	**निगरानी,** समुद्री बुनियादी ढाँचे और संयुक्त सुरक्षा उपायों को मज़बूत करना।
उच्च रसद लागत और खराब प्रत्यक्ष शिपिंग मार्ग व्यापार वृद्धि को बाधित करते हैं।	CECPA का विस्तार करना; **भारतीय रुपया-मॉरीशस रुपया भुगतान प्रणाली** लागू करना, व्यापार सुगमता में सुधार करना।

तेल रिसाव, तटीय क्षरण और जलवायु परिवर्तन **मॉरीशस के पर्यटन एवं अर्थव्यवस्था के लिये खतरा** हैं।	**हरित ऊर्जा, जल सुरक्षा, नीली अर्थव्यवस्था,** जलवायु अनुकूलन और समुद्री संरक्षण को प्राथमिकता देना।
मॉरीशस के टैक्स हेवन के रूप में दुरुपयोग का जोखिम; नियामक चुनौतियाँ बनी हुई हैं।	**धन शोधन विरोधी सहयोग** को बढ़ावा देना, **मॉरीशस को एक वित्तीय केंद्र** के रूप में सुदृढ़ करना।

भारत-श्रीलंका मत्स्य ग्रहण विवाद

भारत-श्रीलंका मत्स्य ग्रहण विवाद, पाक जलडमरूमध्य और कच्चातिवु द्वीप के निकटवर्ती क्षेत्रों में मत्स्य जीविकोपार्जन और पारिस्थितिक संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करने हेतु 'मानवीय दृष्टिकोण' की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

- **स्थान:** विवाद का केंद्र **पाक जलडमरूमध्य** है, जो तमिलनाडु और **श्रीलंका के उत्तरी प्रांत** को अलग करता है; इसमें **कच्चातिवु** भी शामिल है (पाक जलडमरूमध्य में स्थित एक छोटा, निर्जन द्वीप, जिसे **वर्ष 1974 के समुद्री सीमा समझौते** के अंतर्गत श्रीलंका को सौंपा गया था)।
  - भारतीय मछुआरे जाल सुखाने और धार्मिक उद्देश्यों के लिये **कच्चातिवु** जा सकते हैं, मत्स्य ग्रहण के लिये नहीं।
- **शासनाधीन: संयुक्त राष्ट्र समुद्री विधि अभिसमय (UNCLOS, वर्ष 1982)** एवं द्विपक्षीय व्यवस्थाएँ।
- **मुख्य मुद्दा:** भारतीय यांत्रिक ट्रॉलर्स श्रीलंका के जलक्षेत्र में प्रवेश करते हैं तथा **बॉटम ट्रॉलिंग** करते हैं (जिसे **श्रीलंका में वर्ष 2017 से प्रतिबंधित किया गया है**), जिससे प्रवाल भित्तियों और मत्स्य भंडार को क्षति पहुँचती है।
  - **पारंपरिक मछुआरे** व्यावसायिक ट्रॉलर्स द्वारा संसाधनों के क्षय से प्रभावित होते हैं।
- **हाई सीज़/उच्च समुद्री क्षेत्र संबंधी चिंता: हाई सीज़** में जाने वाले भारतीय मछुआरे **मालदीव के जलक्षेत्र** तथा **डिएगो गार्सिया** के निकट **गिरफ्तारी** का सामना करते हैं।

विवाद के समाधान हेतु सुझाव

- **आजीविका को प्राथमिकता देना:** पारंपरिक मछुआरों का सहयोग करना; यांत्रिक बॉटम ट्रॉलिंग को चरणबद्ध रूप से समाप्त करना (जो पारिस्थितिकी तंत्र को क्षति पहुँचाती है)।
- **सुदृढ़ सहयोग:** भारत–श्रीलंका मत्स्य प्रबंधन परिषद का गठन करना; पाक जलडमरूमध्य एवं मन्नार की खाड़ी में सहयोग हेतु **UNCLOS अनुच्छेद 123** का उपयोग तथा **संयुक्त कोटा पर विचार करना** (उदाहरण – बाल्टिक सागर मत्स्य अभिसमय का कोटा-साझाकरण (Quota-Sharing) मॉडल)।
- **गहन समुद्री बदलाव:** भारत के **विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) में मत्स्य ग्रहण** को प्रोत्साहित करना; प्रशिक्षण, आधुनिक पोत तथा वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराना।
- **कच्चातिवु का राजनीतिकरण न करना: वर्ष 1974 की संधि** को स्वीकार करना; स्पष्ट करना कि इसे "उपहार" में नहीं दिया गया था; संप्रभुता और मत्स्य ग्रहण अधिकारों में भेद करना। **कच्चातिवु का उपयोग संयुक्त समुद्री अनुसंधान केंद्रों हेतु करना।**
- **सहानुभूति को प्रोत्साहन :** श्रीलंका के गृहयुद्ध के दौरान **तमिलनाडु द्वारा दिये गए मानवीय सहयोग** को ध्यान रखते हुए जन संबंधों को बढ़ावा देना।

पश्चिमी घाट में ब्लैक एस्परगिलस

वैज्ञानिकों ने **ब्लैक एस्परगिलस (एस्परगिलस ढाकेफाल्करी और एस्परगिलस पेट्रीसियाविल्टशायरी) की दो नई प्रजातियों की खोज की है**, जिसमें उन्नत पॉलीफेसिक टैक्सोनॉमी का उपयोग किया गया है, यह इस प्रकार का भारत का पहला अध्ययन है।

- **ब्लैक एस्परगिलस** एक विविध तंतुमय कवक है।
- साइट्रिक अम्ल उत्पादन, खाद्य कवक विज्ञान, किण्वन प्रौद्योगिकी और कृषि में **'औद्योगिक अनुप्रयोगों के कार्यबल' (workhorses of industrial application)** के रूप में भी जाना जाता है।

विश्व के 8 'सबसे उष्ण जैव-विविधता हॉटस्पॉट'

- मेडागास्कर
- फिलिपींस
- सुंडालैंड **(दक्षिण-पूर्व एशिया)**
- ब्राज़ील के अटलांटिक वन
- कैरिबियाई द्वीप समूह
- भारत-बर्मा क्षेत्र **(पूर्वोत्तर भारत से वियतनाम तक)**
- पश्चिमी घाट **(यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल) और श्रीलंका**
- पूर्वी आर्क और तटीय वन (तंजानिया और केन्या)

डीज़ल के साथ आइसोब्यूटेनॉल का सम्मिश्रण

भारत असफल रहे एथेनॉल–डीज़ल सम्मिश्रण परीक्षणों के बाद अब **आइसोब्यूटेनॉल–डीज़ल सम्मिश्रण** के क्षेत्र में संभावनाएँ तलाश रहा है।

- **आइसोब्यूटेनॉल ($C_4H_{10}O$):** ज्वलनशील, रंगहीन द्रव्य; पारंपरिक रूप से पेंट, कोटिंग और रसायन उद्योगों में विलायक के रूप में प्रयुक्त; **उत्पादन: पेट्रोकेमिकल्स या बायोमास के किण्वन** द्वारा।
- **गुणधर्म (एथेनॉल की तुलना में):** अधिक ऊर्जा घनत्व, **कम आर्द्रता-आकर्षण (हाइग्रोस्कोपिसिटी)**, संक्षारण का जोखिम कम होता है।
- **सम्मिश्रण परीक्षण: ARAI ने 10% आइसोब्यूटेनॉल–डीज़ल सम्मिश्रण का परीक्षण प्रारंभ किया।**
  - आइसोब्यूटेनॉल को स्वतंत्र ईंधन के रूप में तथा **CNG–आइसोब्यूटेनॉल फ्लेक्स-फ्यूल के रूप में भी ट्रैक्टरों और कृषि मशीनरी** में परीक्षण किया गया।
- **लाभ:** राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति (2018) के अनुकूल है एवं इससे किसानों की आय में वृद्धि की संभावना है।

समुद्र प्रदक्षिणा

रक्षा मंत्री ने **'समुद्र प्रदक्षिणा'** को हरी झंडी दिखाई, जो **विश्व की पहली ट्राई-सर्विस (थल, जल, वायु सेना) ऑल-वुमन** नौका परिक्रमा यात्रा है। यह दल **IASV त्रिवेणी** पर नौ माह तक नौकायन करेगा।

- यह **वर्ल्ड सेलिंग स्पीड रिकॉर्ड काउंसिल** के मानकों का पालन करता है, जिसके अंतर्गत कोई नहर/संचालित पारगमन नहीं, बल्कि सभी देशांतरों को पार करना होगा तथा नौकायन के माध्यम से **21,600 से अधिक समुद्री मील** की दूरी तय करनी होगी।